लाल महल पर शिवाजी महाराज का सर्जिकल स्ट्राइक

शिवाजी महाराज का बचपन लाल महल में ही बीता था।

- शिव जयंती समारोह की पूर्व संध्या पर, शिवाजी महाराज की गाथा सैन्य अधिकारियों की नजर से प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है।
- उनका महान और गौरवशाली व्यक्तित्व दुनिया के सैन्य इतिहास में महाराज द्वारा अपने स्वयं के जीवन के जोखिम पर किए गए कई कार्यों के माध्यम से प्रकट होता है।
- शाइस्ताखां को तबाह करने के लिए आपने सर्जिकल स्ट्राइक का रास्ता अपनाया।

लालमहल पर शिवाजी महाराज की साहसिक छापेमारी विश्व सेना के इतिहास में सबसे अच्छे कमांडो छापे में से एक है।

ऑपरेशन सन राईझ

❖ म्यांमार (बर्मा) के घने जंगलों में छिपे सशस्त्र गिरोह नागालैंड , मणिपुर और मिजोरम में घुसपैठ कर रहे थे ।

❖ उनके ठिकानों को नष्ट करने वाली पहली सर्जिकल स्ट्राइक 14 जून 2015 को हुई। इसमें 21 पैरा के, 70 स्पेशल फोर्स कमांडो 15 किमी भीतर चले गए,

❖ जिसमें 158 सशस्त्र गिरोही मारे गए और उनके ठिकानों को नष्ट कर दिया।

ऑपरेशन ऑल आऊट

- फिर 29 सितंबर 2016 की रातको पाकिस्तान में घुसकर 7 आतंकी ठिकानों को तबाह करने की कार्रवाई भारतीयों के लिए गर्वकी बात थी।
- इसके कारण 'सर्जिकल स्ट्राइक' शब्द की पहचान हमें हो गई।

२९ सप्टेंबर सर्जिकल स्ट्राईक दिवस

SURGICAL
STRIKE DAY

PAKISTAN
Muzaffarabad
Kel
Nowgam
Uri
Lipa
PoK
Mendhar
Tatapani
INDIA
Bhimbar
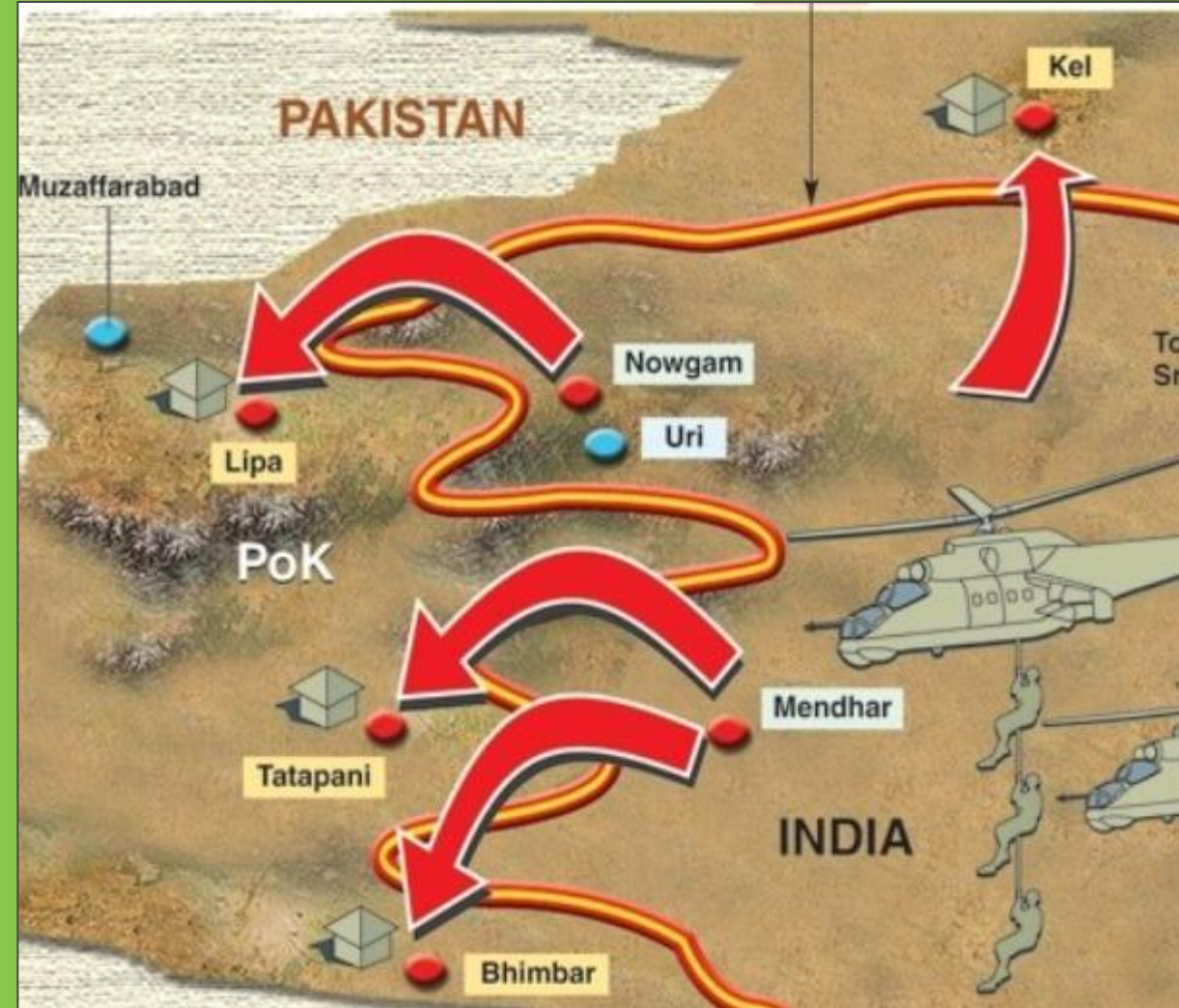
ऑपरेशन लाल महल

❖लाल महल पर शिवाजी महाराज का साहसिक छापा विश्व सैन्य इतिहास के

❖सबसे महान कमांडो छापों में से एक है।

❖सेना इसे सर्जिकल कमांडो स्ट्राइक मान रही है.

ऑपरेशन सर्जिकल स्ट्राईक लाल महल

❖सेना के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

❖ ऐसे चालाक अभियान में तीन चरण महत्वपूर्ण हैं।

❖1. वांछित समय पर, आवश्यक संख्या में, वांछित स्थान पर पहुंचाने की योजना बनाएं।

❖2. किसी स्थान विशेष का विनाश, व्यक्तियों का विनाश।

❖3. प्रदर्शन के बाद अपने सभी सैनिकों के साथ सुरक्षित वापसी करना।

- शिवाजी महाराज के लाल महल पर सर्जिकल स्ट्राइक की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं।
- इस अद्भुत स्ट्राईक की खोज बखर, ऐतिहासिक अभिलेखों, ब्रिटिश पत्र के संदर्भों और सैन्य सेवा में अनुभव से प्रस्तुत की गई है।

पार्श्वभूमी

- मुग़ल सेना कई सरदारों के खेमों में बँटी हुई थी। मराठा सेना के शिविर वहीं थे। उन्हें मुख्य मुग़ल सेना के महत्वपूर्ण सरदारों, राजकोष से दूर रखा गया।
- शाइ(यी)इस्ताखां (ईरानी मूल के - मूल नाम अबू तालिब) मुगल दरबार में वरिष्ठता में पहले स्थान पर थे, औरंगजेब (ताजमहल प्रसिद्धि के मुमताज महल के छोटे भाई) के मामा के रूप में।
- खुशालचंद, रंगेल, विदेशी व्यापारियों का पसंदीदा ग्राहक था क्योंकि वह अपनी पसंदीदा चीजें अपने हाथों से खरीदता था।

शाईस्ताखाँ खान का परिचय

- ❖मुगल सेना कई सरदारों के शिविरों में विभाजित थी। मराठा सेना के शिविर भी थे। उन्हें मुख्य मुगल सेना के महत्वपूर्ण प्रमुखों, खजाने और शस्त्रागार से दूर रखा गया था।
- ❖शाइस्ता खां (ईरानी वंश का - मूल नाम अबू तालिब) मुगल दरबार में एक प्रमुख व्यक्ति थे। ताज महल प्रसिद्ध मुमताज महल - शायद सौतेला भाई - छोटा भाई) इस तरह औरंगजेब के मामा था।
- ❖लापरवाह और विलासी के रूप में विदेशी व्यापारियों का पसंदीदा ग्राहक था उसने खुले हाथों से चीजें खरीदता था। शायद यह एक कारण है कि वह इतना खराब प्रदर्शन क्यों कर रहा था।
- ❖उसने हाल ही में अपनी बेटी की शादी दिल्ली प्रमुख के सरदार बेटे से पुणे में की थी। वह शादी शहर की चर्चा का विषय था। 3 साल से पुणे में तैनात दख्खन के सूबेदार दिल्ली वापस जाना भूल गए थे।

शाइस्ताखाँ 3 साल से पुणे में बैठक जमा कर रहता रहा

❖ शायद वह लोगों पर अभियान चलाकर मौज-मस्ती करना चाहते थे।

❖ उन्होंने हाल ही में अपनी बेटी की शादी दिल्ली के एक ताकतवर सरदार के बेटे से पुणे में बड़ी धूमधाम से की थी। यह चर्चा का विषय था।

❖ दक्षिणी मंडल का सूबेदार, जो तीन वर्षों से पुणे में बैठा था, उत्तर की ओर वापस जाना भूल गया था।

शिवाजा महाराज की टैक्स वसूली पर पहुत बडा बोझ पडने लगा

❖ खाँ के वहां रहने से महाराज के टैक्स वसूली पर बहुत दबाव पड़ रहा था। पुणे के आसपास, विशाल मुगल सेना को तंबूओं, शिविरों और कुछ जब्त किए गए घरों में अजीब तरह से रखा गया था, जबकि खान खुद अपने रिश्तेदारों, नौकरों और सेवकों के साथ लाल महल में दरबार लगा रहे थे।

❖ समय-समय पर वे दिल्ली पत्र भेजकर प्रसन्न होते थे कि सब कुछ ठीक है। इस पृष्ठभूमि में महाराज को जबरदस्त कार्रवाई करनी पड़ी. महाराज को यह एहसास हो गया था कि पहाड़ी किले के कोने में उनकी विशाल सेना को खदेड़ना संभव नहीं है।

धूर्तता की योजना

- लाल महल में प्रवेश करने के लिए वर्तमान सैन्य भाषा में 2 कंपनी आकार के कम से कम 200 बहादुर सैनिकों की आवश्यकता थी। उनका नेतृत्व कोयाजी बंदल, चंदजी जेधे, बाबाजी और चिमनाजी देशपांडे आदि ने अपनी-अपनी कंपनियों के कमांडर के रूप में किया था।
- महाराज के स्वयं के सुरक्षा बलों की 2 प्लाटून (लगभग 60 लोग) ने कड़ी सुरक्षा को तोड़ दिया और लाल महल की उच्च सुरक्षा वाली दीवारों को पार करने के लिए रस्सी की सीढ़ी का इस्तेमाल किया, और कुछ स्थानों पर विध्वंस सामग्री के साथ पत्थर, गार्ड आदि लाए। दरवाजे और दीवारें तोड़ने के लिए,
- तीसरी पलटन को सोती हुई मुगल सेना को भ्रमित करने के लिए ढोल, ताशे और तुरही बजाकर जोर से शोर मचाना था।

१. इच्छित समय पर, आवश्यक संख्या में, एकदम सही स्थान पर पहुंचाने का प्रथम चरण

❖ तीसरी कंपनी नदी पार करने और अपने शेष सैनिकों को बचाने के लिए तैयार थी। जरूरत पड़ने पर उन्हें पैसे खिलाकर अतिरिक्त घोड़े खरीदने पड़ते थे।

❖ फिर सब धीरे-धीरे सिंहगढ़ की तलहटी में इकट्ठा हो जाते ।

❖ कुछ अपने परिचितों को देखने बाहर जाते और रात की घटना की खबर वापस लाते।

सैनिकों की छावनी में घुसने की योजना

- गेट पास - बहाने से, एक ग्रामीण की शादी - ताशा , ग्रामीण बैंड) द्वारा निभाई गई - एक दुल्हे के रूप में बाराती, जुलूस बाहरी सुरक्षा गार्डों के साथ मिला, मुगल बैरक में प्रवेश किया।
- (वर्तमान संदर्भ में कात्रज के दामाद की शादी खड़की के दूल्हे की बेटी से हुई)) अन्य जानवरों के साथ बारातीयों का जुलूस गेट पास के साथ पहूंचा।
- सच्ची शादी की सामग्री की जांच करने के बाद सुरक्षा गार्डों ने उन्हें आंतरिक सुरक्षा घेरे में जाए बिना बाहर जाने की चेतावनी दी।

कात्रज गांव का दुल्हा खड़की गांव की दुल्हन

अभियान शुरू हुआ

दूल्हा बैलगाड़ी में बैठकर रवाना हुआ

सैन्य अड्डों में प्रवेश के लिए गहन जांच

सुरक्षा में सुस्ती और चारों ओर अव्यवस्था

- तीन साल तक रहने के बाद, हजारों मुगल तंबू, झोपड़ियां, पशु अस्तबल, सरदारों के सैनिकों के लिए गोदाम आदि बिखरे हुए थे।
- मैरेज पार्टी के वेश में सर्जिकल टास्क फोर्स ने सुरक्षा में सुस्ती और चारों ओर अराजकता का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया, वे चलते रहे।
- पूछने पर गेट पास दिखाया। कंपनी कमांडरों ने हाई-सिक्योरिटी रिंग में जाने के लिए रास्ते बदल दिए। मोड़ के मोड़ पर, कुछ प्लाटून कमांडर अपने - अपने दिशाओं में भाग गए। महाराज भी शादी में गांव के लोग शामिल थे।

लाल महाल के ३ सुरक्षा घेरे

उस दिन और रात का महत्व

❖ सूरज ढल गया। * चैत्र शुद्ध अष्टमी, 5 अप्रैल 1663, शोभन नाम संवत्सर, शक 1585 की तिथि और रमजान महीने की षष्ठी थी।

❖दिन की एक और विशेषता यह थी कि यह सम्राट औरंगजेब के सिंहासन पर बैठने के सबसे प्रसिद्ध दिनों में से एक था।

दबे पांव कस्बे में प्रवेश

- उस समय की चौकियाँ (वर्तमान में क्वार्टर गेट, स्वार गेट, पुल गेट कहलाती हैं) शहर में आती रहीं, गेट, अंबिल और अन्य धाराओं को दरकिनार करते हुए, धाराओं के रास्ते में उतरती रहीं और कभी-कभी घरों के सामने आगे बढ़ती रहीं।
- इस क्षेत्र में आने-जाने वाले मावलों ने अन्य लोगों के साथ मिलकर लाल महल के तटबंध के पिछले हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।

कात्रज घाटी से कस्बा पुणे तक सेना पहुंची...
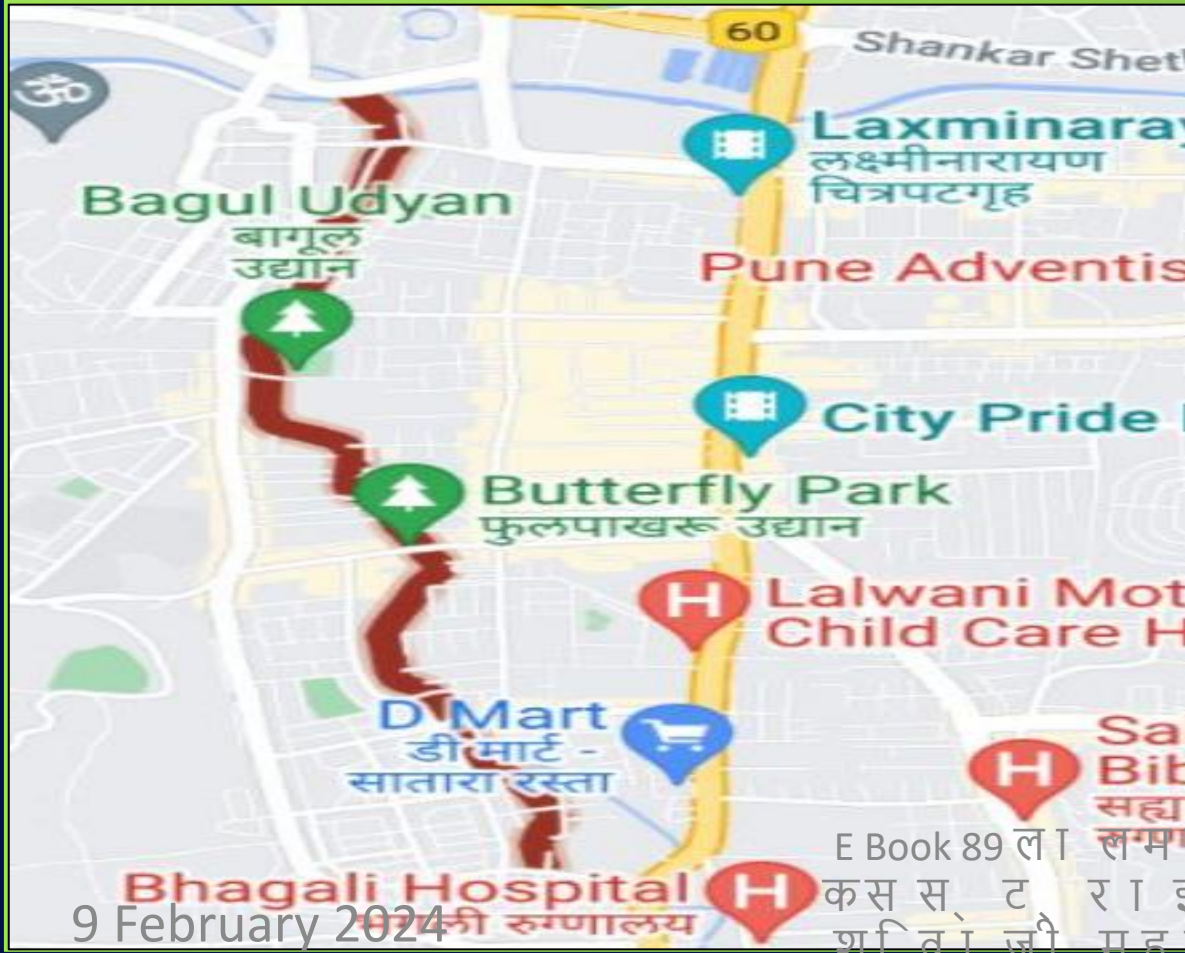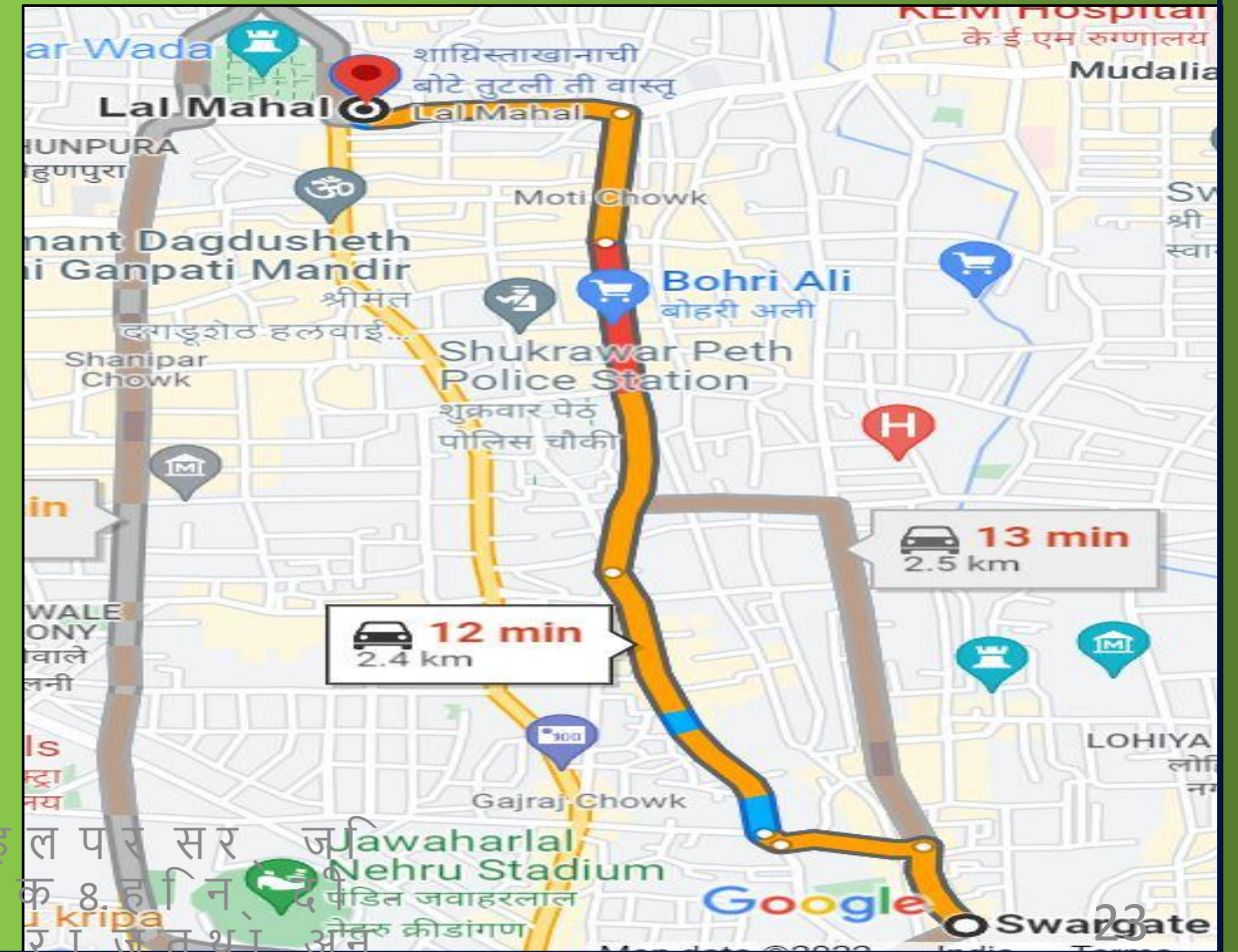
चांद का उजाला आँगन से गायब हो गया

- ऊपर परिवार के लोग खाना खा रहे थे और चहचहाते बच्चे नींद का आनंद ले रहे थे।
- पवन-पंखा चलाने वाले नौकर सो गये थे और ज़मीन पर लेटे हुए थे। रात 12 बजे के बाद चंद्रमा सिर से उठ गया और केंद्र प्रांगण (चौसोपा) में अंधेरा छा गया।
- बहुत दिनों के बाद सुबह सूर्योदय से पहले नाश्ता बनाने के लिए रसोइये चूल्हा जलाने का काम करने लगे।

पहरेदारी में ढिलाई

- सामान्यत: किसी भी इमारत, महल, कार्यालय के पिछले हिस्से पर उस इमारत, हवेली में काम करने वाले नौकरों का कब्जा होता है।
- जो लोग, महिलाएं रात में लघुशंका करने के लिए अंदर रुके थे, उन्हें दरवाजे खुले रखकर नजरअंदाज कर दिया गया ताकि कोई परेशानी या बाधा उत्पन्न न हो।

2. संरक्षित जगह की बरबादी तथा व्यक्तियों का विनाश।

- पहले चरण में सुरक्षित अंदर पहुंचने के बाद... दूसरे चरण काम काम शुरू हो गया।
- महाराज के साथ पलटन सोच रही थी कि रस्सियों के सहारे ऊपर कैसे चढ़ा जाए।
- जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, कुछ लोग गेट से अंदर घुसकर देखने लगे।
- नवनिर्मित भतरखाने से गुजरने के बाद उसे एहसास हुआ कि वह सीधे मुख्य हवेली के चौक तक जा सकता है।
- भोजन समाप्त होने के बाद सरदार की बेगमों की नानी और बच्चे निचली मंजिल पर सो रहे थे।

रस्सी की सीढ़ियों से उपर चढने के लिए दिवार में खूंटियां गाडनी थी।

❖सबसे ऊपरी मंजिल पर चढ़ने और वहां से हमला करने के लिए सीढ़ियां और खूंटियां लाए थे। लेकिन महाराज ने दबी आवाज़ में चर्चा करने के बाद और अधिक मावलों के साथ रसोईखाना की तरफ से जाने का फैसला किया ताकि हथौडों की दस्तक से कोई जाग न जाएं और अपना उद्देश्य न खो दें।

❖चौकी से सीढ़ियाँ किस तरफ हैं, मुख्य महल, पड़ोसियों के शयन कक्ष आदि का पता चल जाता था क्योंकि महाराज स्वयं घेरे में थे।

रात का खाना जल्दी-जल्दी तैयार हो रहा था

- शिवाजी महाराज के साथ पलटन सोच रही थी कि रस्सियों के सहारे कैसे चढ़ा जाए। जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, कुछ सैनिकों ने दरारों से झाँककर देखा। नवनिर्मित रसोईघर से गुजरते हुए उन्होंने देखा कि सीधे मुख्य हवेली के चौक तक जाया जा सकता है।
- मुख्य महल, जहाँ निकटवर्ती शयनकक्ष स्थित हैं, सीढ़ियों के किस ओर मुख्य महल है, जहाँ निकटवर्ती शयनकक्ष स्वयं महाराजा की हलचल में माने जाते हैं।
- जब भोजन समाप्त हो गया तो नीचे की ओर चूल्हे की लकड़ियों में आग लगा दी गई, भेड़-बकरियों का वध किया गया और शाही कबाब बनाने की तैयारी की गई।
- शिवाजी महाराज ने अपने अंगरक्षकों को आगे कर अपनी नंगी तलवार निकाल ली। चेक पोस्ट की ओर जा रहे कुछ रसोइयों का गला घोंट दिया गया।

शाही कबाब की तैयारी

- चूल्हे जलाए गए, भेड़-बकरियां काटी गईं और शाही कबाब बनाने की तैयारियां शुरू हो गईं.
- महाराज अपने अंगरक्षकों को सामने रखते हुए नंगी तलवार लेकर आगे बढ़े।
- जब तक वे चौकी पर पहुँचे, रास्ते में कुछ खान अपना सिर हिला रहे थे।

शिवाजी महाराज तलवार लेकर तैयार हो गये

❖ रमज़ान के रोज़े के महीने में दिन के भूखे सिपाहियों को उन लोगों पर टूट पड़ते देखा गया जो अपने तंबू से खाना ला रहे थे। अंधेरे से बाहर, शिवाजी महाराज एक हथियार के साथ तैयार हो गए, अपने साथ सैनिकों की गिनती की और अत्यधिक सुरक्षा में सेंध लगाने के लिए तैयार हो गए।

❖ उस समय (जिसे अब क्वार्टर गेट, स्वार गेट, पूल गेट कहा जाता है) चौक, गेटों, अम्बिल और अन्य नालों से गुजरते हुए, खाड़ियों में उतरते हुए और कभी-कभी घरों के किनारे से आगे बढ़ते हुए आते रहे। कुछ सैनिक जो इस क्षेत्र के आदी थे, उन्होंने अन्य लोगों के साथ मिलकर लाल महल की दीवार के पिछले हिस्से को पकड़ लिया।

❖ (आम तौर पर किसी भी इमारत, हवेली, कार्यालय के पिछले हिस्से पर उस इमारत, हवेली में काम करने वाले नौकरों का कब्जा होता है।) इसलिए सुरक्षा में हमेशा ढिलाई रहती है।

वर्तमान लाल महल का भूतल प्रांगण
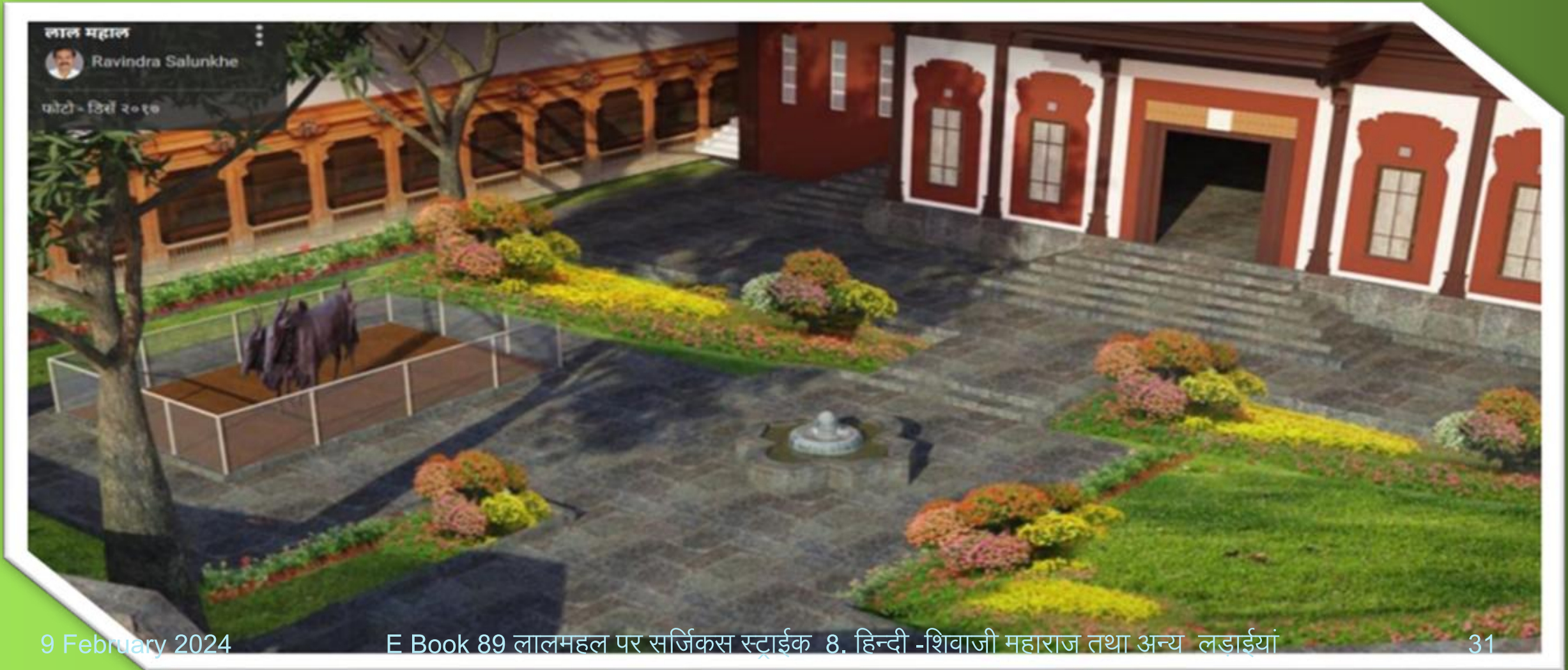
नौकर गहरी नींद में सो रहे थे

❖ बीच के चबूतरे पर कुछ नौकर चादर फैलाये सो रहे थे। उन्हें पार करते समय कुछ जाग गए।

❖ घबराकर कोई बोले 'कौन है?' क्या हुआ?'

❖ तबतक उनकी गर्दन मरोडी गई। वे नर्क की ओर अपना रास्ता तय करने लगे।

चौसोपा प्रांगण में सोए नौकरों की मृत्यु हो गई

❖ बीच के चबूतरे पर कुछ नौकर चादर फैलाये सो रहे थे। उन्हें पार करते समय कुछ जाग गए।

❖ घबराकर कोई बोले 'कौन है?' क्या हुआ?'

❖ तबतक उनकी गर्दन मरोडी गई। वे नर्क की ओर अपना रास्ता तय करने लगे।

जनानखाने में गदर

- ❖ जैसे-जैसे अंगरक्षक महाराजा के पीछे चढ़ रहे थे, वे फिसल रहे थे और जो भी उन्हें दिख रहा था उसे घायल कर रहे थे। 'या अल्ला, मेहेरबानी कर' जैसी आवाजें और चीखें अब धीमी आवाज में सुनाई देने लगीं। महाराज एक-एक करके कमरे में जा रहे थे और हंगामा कर रहे थे।
- ❖ तभी खान का बेटा अब्दुल फ़तेह सतर्क हो गया और चिल्लाया, ' गनीम आया है! दौड़ो!

'अब्बाजान, आप नीचे भागो! दुश्मन उप्पर तक आया है!'

❖ आवाज की दिशा में एक अंगरक्षक को घायल करके, उसने अपने पिता को जगाया और महाराज को भागने के लिए उकसाया। अँधेरे में टिमटिमाती आधी-अधूरी रोशनियों की रोशनी में महाराज के तलवार वाले हाथ सामने की ओर वार कर रहे थे।

❖ महाराज मोटे पेटवाले खान को नहीं ढूंढ सके। उधर, खान को लग रहा था कि कुछ ' भयानक' हो रहा है।

❖ अंधेरे में तलवारें, खंजर कोई शस्त्र खान अंदाजे से ढूंढ रहा था। लड़का अपने कमरे के पास चिल्ला रहा था, 'अब्बाजान, भाग जाओ! 'दुश्मन ऊपर तक आया है!' वह महाराजा की तलवार से मारा गया।

अब शाइस्ताखां मिल गया...!

- अब खान मिल गया...!किसी ने टिमटिमाती रोशनी बुझा दी और उसे बंद कर दिया। खान दूसरे दरवाजे से होते हुए बड़े कमरे में चला गया।
- महाराज के पूर्वानुमेय प्रहारों से पीड़ित लोगों की चीखें कुछ महिला स्वरों में सुनाई दे रही थीं। जो लोग 'भागो भागो' चिल्लाते हुए चिनचिला सीढ़ियों से भाग सकते थे।
- महाराज भोजन की तलाश में थे। कुछ आवाजें अंधेरे में सामने आने वालों पर हमला करने वाले पुरुषों की थीं। महाराज ने सोचा कि किसी के घायल होने की आवाज खान की होगी।

सीढ़ियों से भाग दौड़ना

❖ यह महसूस करते हुए कि ऊपरी मंजिल पर अधिक लोग नहीं बचे हैं, महाराज अस्थायी रूप से सीढ़ियों से नीचे आ गये।

❖ वहां हर कोई ग्राउंड फ्लोर चौकी की सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिए संघर्ष कर रहा था।

❖ अँधेरे में यह संभव नहीं था कि खाना पहले खिसक जाए।

❖ और तो और, जब वे महाराज के अंगरक्षकों के सामने आये तो छुरे-छुरे ही वार कर रहे थे।

शाइस्ताखां वह दोनों हाथों से खिड़की की मुंडेर पर लटका हुआ था

❖खां ने सारी धांधली देखकर तुरंत बगल की छोटी सी खिड़की से नीचे लटकने की सोची और जल्दी से अपने मोटे शरीर को पास की खिड़की से धकेल दिया।

❖ठीक उसी समय महाराज को खिड़की के पास अँधेरे में कुछ हलचल दिखाई दी।

खां ऐसी ही एक खिड़की से गिर गए और उनकी उंगलियां टूट गईं!

महाराजने खां को देखा

- महाराज ने एक को लटका हुआ देखा। वह खां था। लेकिन महाराज आश्वस्त होना चाहते थे।
- वह दोनों हाथों से खिड़की की मुंडेर पर लटका हुआ था।
- उसकी छाती फूल रही थी। पसीने की धाराएँ बह रही थीं,
- हाथ-पैर झनझना रहे थे।

इब्लिस सिवा, तो नहीं?

❖ अचानक हुए हमले में कौन शामिल था? ' जब तक वह कुछ सोचता, उसकी कलाई पर वार किया गया। एक बार फिर तलवार खिड़की के पास की दीवार से टकराई और वार दाहिने हाथ की उंगलियों पर लगा।

❖ छोटी उंगली और अंगूठे को छोड़कर बाकी तीन उंगलियां घायल हो गईं और टुकड़ों में कट गईं। खान ने दोनों हाथ छोड़ दिए, खून की धार बहते हुए उसने अपने हाथ हिला दिए।

❖ उसका भारी शरीर पहले से गिरी हुई लाशों के ऊपर लुडक गया। खान गंभीर रूप से घायल हो गया था. फिर उसने खुद पर काबू पा लिया। गुसलखाने में छिप गया और वहां का पानी घावों पर डाला और रोता रहा।

एक प्रातिनिधिक चित्र

Shivaji attacks Shaistakhan.
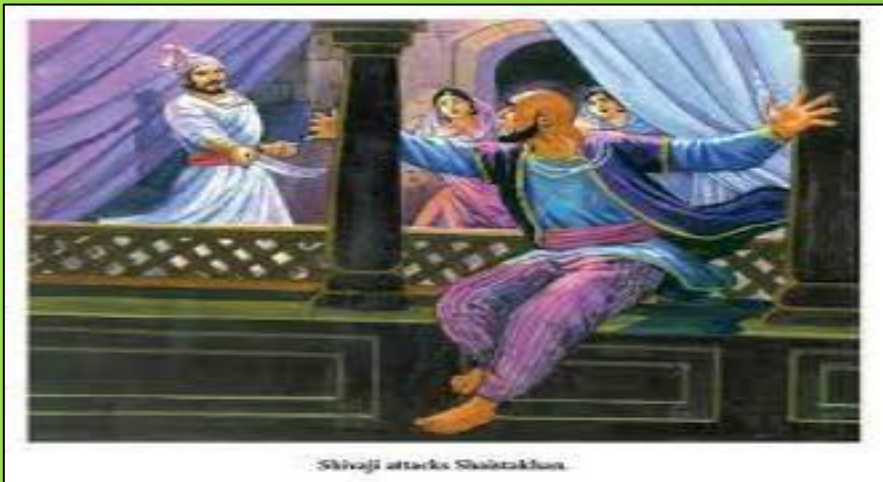
खाना को असल में किसी ने नहीं देखा था..

- नौकर तितर-बितर हो गये। महाराज ने अपने अंगरक्षकों को फिर से ऊपर भेजा और बचे हुए लोगों को मारने का आदेश दिया।
- जिसे मारने का बीड़ा उठाया, वह बचना नहीं चाहिए था। ऊपरी मंजिल पर कुछ महिलाएँ, पुरुष मारे गए, लेकिन यह सुनिश्चित हो न पाया कि खां को असल में किसी ने नहीं देखा था। भी इसमें शामिल हो। कारण था की खां को असल में किसी ने नहीं देखा था।

३. मिशन पूरा कर सभी सैनिकों की सुरक्षित वापसी

- ❖ महाराज के साथ आए मावले यह सोच ही रहे थे कि अब यदि अन्दर का शोर बाहर सैनिकों को सुनाई दे गया तो हम यहीं मर जायेंगे।
- ❖ तब अचानक बाहर से तुरही, ढोल-नगाड़ों की आवाजें आने लगीं।
- ❖ बाहर तंबू में सोए सैनिक 'क्या बात क्या बात'? किस लिए शोर उठ रहा है? वह आंखें मलते हुए एक-दूसरे से पूछते रहे।

अचानक ढोल ताशे बजने लगे

❖ये आवाज तो नमाज की है नहीं? फिर क्या हो माजरा हो सकता है?' उलझन बढ़ती गई. लाल महल के बाहर गश्त कर रहे सैनिक अपनी आँखों पर पट्टियाँ खोलकर आवाज़ की ओर दौड़ पड़े। तब तक कहीं और से ढोल बजने लगे। सब कुछ अस्त-व्यस्त था। वास्तव में क्या हुआ? आवाज किस तरफ से आ रही थी?

❖जो सैनिक तैनात नहीं थे, उन्होंने यह विचार छोड़कर अपनी करवट बदली, रजाई में सिर छिपा लिया और खर्राटे लेने लगे!

भेसुरी की आवाज़ धीमी होकर रुक गयी

- जैसा कि पहले योजना बनाई गई थी, जैसे ही ज्वार की आवाज़ आती, हम सभी सैनिक नदी के तल में उतर जाते और परली तरफ के तीर पर भांबुर्डा से पातालेश्वर की ओर भाग जाते।
- तो अब वह यह विचार छोड़ कर कि कौन मरा और कौन घायल हुआ, बैरक से पीछे के दरवाजे से नदी की ओर हरएक भागा।
- कुछ देर बाद भिनभिनाहट का शोर कम होकर बंद हो गया। महाराज समझ गये कि वह चला गया!

9 February 2024

मुळा नदी पार करने के बाद शिवाजी महाराज चतुश्रृंगी और शिवणे गांव से होते हुए सिंहगढ़ की तलहटी में आये।

साथ वाले सिपाही आते रहे

❖तीसरी पलटन के पास कई घोड़े तैयार थे। दो अंगरक्षकों के साथ महाराज चतुश्रृंगी पहाड़ी की परिक्रमा करते हुए पाषाण गांव पहुंचे।

❖नदी पार कर चुके बाकी अंगरक्षकों को अतिरिक्त घोड़ों पर भेजा जाता रहा।

❖उधर महाराज पाषाण गांव आने तक सुबह होने लगी थी।

लालमहल से सिंहगढ़ वर्तमान मार्ग

Pashan Tank Rasta
BAVDHAN
बावधन
KOTHRUD
कोथरूड
बावधन गाव
6 hr
29.2 km
5 hr 31 min
26.8 km
शिवणे गाव होकर
Khadakwasla Dam
खडकवासला डॅम
BAPS Swamin
esort & Lawns
Wilderness Hill Top Resort
विल्डरनेस हिल टॉप रिसॉर्ट
Krushnai Water Park & Resort
कृष्णाई वॉटर
Donaje
डोनजे
सिंहगड तलहटी
Sinhagad Valley
सिंहगड व्हॅली
Sinhagad Fort

Science Education and...
Agriculture College Ground
State Bank of India
Dr Anil Habbu
Sub Registrar Haveli No. 15
1 hr 50 min
8.3 km
चतुश्रृंगी टेकडी के पीछे से
Pashan Rd
Pashan Chowk
Armament Research and Development...
Chittaranjan Vatika
The Pavilion
पाषाण
SHIVAJINAGAR
RTO Pune
Cloudnine Hospital - SB Road
Shri Mhatoba Gad Mandir (Devastan)
HDFC Bank
Chowki
Dr Sanjeev Dole
ARAI hills
लालमहाल
MIT World Peace University
Lal Mahal
Google

महाराज ने अटकरवाड़ी में विश्राम किया

- महाराज ने डोणजे से सिंहगढ़ की तलहटी में अटकरवाड़ी में एक घंटे तक विश्राम किया। अब खाना की सेना के इधर आने की कोई सम्भावना न रही। उसके बाकी साथी जमा होते गये।
- वे आपस में चर्चा करते रहे कि खां इस लड़ाई में मर गया होगा या गंभीर रूप से घायल हो गया होगा। जो लोग पीछे रह गए उनके पास लाइसेंस था।
- वे इसे दिखाते हुए अंदर घूम रहे थे और 'पिछली रात' के बारे में बात कर रहे थे।

वापस लौटने वालों से मिली खबरें

❖ वापस लौटने वालोंने बताया की शाइस्ताखां की जान बच गई, उनका हाथ गंभीर रूप से घायल हो गया, कुछ उंगलियां टूट गईं।

❖ उस रात 51 लोगों की मौत हो गई। इनमें बेटा, दामाद, 12 खाने की बेगम, दूसरे घरों के रिश्तेदार भी थे।

❖ खबर आई कि लाल महल के जनानखाने में 100 से अधिक महिलाएँ, नौकर-चाकर गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हे बारातियों का परवाने दिये गए थे, उन लोगों की तलाश के आदेश दिये गये.।

उस रात को शाइस्ताखां जिंदगीभर भूला न पा सका!

- (खां की उसी रात मृत्यु हो जाती)।
- पर बाद में वह 89 साल की उम्र में 31 साल तक जीवित रहे और अल्लाह को प्यारे हो गए!
- लेकिन हर दिन बची उंगलियों से खाते-पीते हुए लाल महल की वह रात नहीं भूल सका!)

सार्थकता

- सर्जिकल स्ट्राइक की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आगे क्या होता है। शाइस्ताखां, जिसने 3 साल तक ऐसपैस डेरा डाला था, 3 दिनों में पुणे से भाग निकला।
- पुणे पर लटकी तलवार ढीली हो गई। पूरे बेस के उठने और जाने का समय हो गया था।
- खां के तत्काल निलंबन के साथ, औरंगजेब ने अपने 20 वर्षीय बेटे शहजादा मुअज्जम खान को नियुक्त किया।

शिवाजी महाराज जागतिक पटल पर प्रथम क्रमांक के योद्धा थे...